Toppersnotes
Unleash the topper in you

IAS

सामान्य अध्ययन पेपर - IV

भाग - I

SIERRA INNOVATIONS
Private Limited

विषय-सूची

1.	परिचय	1
2.	नियतिवाद	5
3.	अनैतिकता	11
4.	धार्मिक और अनैतिक	13
5.	मूल्य और चेतना	22
6.	भारतीय दर्शन	29
7.	मनु दार्शनिक	35
8.	चार्वाक	38
9.	महात्मा गांधी	40
10.	पंचव्रत	41
11.	पश्चिमी नीति मीमांसा	43
12.	सुकरात	45
13.	पश्चिमी नीतिशास्त्र	49
14.	उपयोगितावाद	56
15.	काण्ट	61
16.	हीगेल	63
17.	मनोविज्ञान	67
18.	बुद्धिलब्धि (I.Q)	69
19.	भावनात्मक बुद्धिमता	74
20.	मनोवृत्ति	78
21.	अनुनयन	86

परिचय

ETHICS INTEGRITY AND APTITUDE

Attitude:- किसी विषय, विशेष पर नकारात्मक या सकारात्मक व्यवहार ही Atitude है।

Aptitude:- किसी व्यक्ति विशेष की क्षमता व रूझान के आधार पर क्षैत्र विशेष में उपलब्धि की प्राप्ति करना तथा अच्छा प्रदर्शन करना ।

1. किसी विशेष क्षैत्र में जाने योग्य है या नही इसका परीक्षण करन
2. Aptitude ऐसा होना चाहिए जिससे समस्या की गहराई को समझा जा सके।

Intelligency (भावनात्मक समझ): – किसी दी हुई परिस्थिति में निर्णय लेने की क्षमता 'भावनात्मक समझ' है।

दी गई परिस्थितियों में उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग करके समस्या का हल निकालना ''Intelligency'' है।

Emotional intelligency:-

1. दी गई परिस्थितियों में उपलब्ध संसाधनों के साथ दूसरों के भावनात्मक रूप कों समझकर समस्या का हल निकालना ही Emotional Intelligency कहतें है ।
2. दूसरों की मनःस्थिति को समझकर अधिकतम लाभ प्राप्त करना और समस्या का समाधान निकालना

डेनियल गोलमेन :–"Emotional Intelligence" साधारणत Intelligence की तुलना में ज्यादा उपयोगी है।

''थॉमस हॉब्स'':– ''प्रत्येक मनुष्य स्वार्थी प्राणी है ''अगर कोई व्यक्ति आपके लिए हाथ भी उठाता है तो निश्चय ही उसका स्वार्थ उसमें नीहित है'' इसका मानना है कि माँ भी शुद्ध रूप से स्वार्थी है ।

'' कार्ल मार्क्स'':– ''का मानना है कि मनुष्य मूल रूप से परमार्थी है ।''

प्र.1. नैतिकता से आप क्या समझते है यह आत्मनिष्ठ होती है या वस्तुनिष्ठ ?

प्र.2. नैतिक प्रतिमान किन आधारों पर निर्धारित होतें है नैतिक प्रतिमान देश और काल के सापेक्ष होते है या उनसे मुक्त कुछ लोग मूल्य को शाश्वत मानते है जबकि कुछ अन्य के अनुसार मूल्य परिस्थितियों के अनुसार बदलतें रहतें है इस सम्बन्ध में आपकी क्या राय है ?

प्र. 3. किसी समाज के लिए नैतिक प्रतिमान/नैतिक मानदण्ड या नैतिक व्यवस्था क्यो आवश्यक है क्या यह मानना पर्याप्त नही है कि हर व्यक्ति विवेकशील होता है और वह स्वयं अपने लिए उचित कर्मो का निर्धारण कर सकता है ?

प्र. 4. क्या हमारे सभी कार्य नैतिक या अनैतिक होते है या कुछ कार्य ऐसे भी होते है जो न नैतिक हो और अनैतिक अपने जीवन के उदाहरण देकर स्पष्ट करें ?

प्र. 5. संकल्प की स्वंतत्रता से आप क्या समझते है नैतिकता को समझने तथा किसी व्यक्ति के नैतिक कर्मो के मूल्यांकन के लिए यह क्यों जरूरी है ?

प्र. 6. नैतिक होने और धार्मिक होने में क्या सम्बन्ध है । क्या बिना नैतिक हुए धार्मिक और बिना धार्मिक हुए नैतिक हुआ जा सकता है । उदाहरण देकर स्पष्ट करें ?

प्र. 7. प्रत्येक नैतिक व्यवस्था और नैतिक मानदण्ड गहरे अर्थो में अनैतिक होता है। उदाहरण देकर इस कथन की व्याख्या करें ।

प्र. 8. नैतिक व्यवस्था के व्यक्ति और समाज पर क्या परिणाम होते है ये सकारात्मक होते है या नकारात्मक उदाहरण देकर सिद्ध करें ?

प्र. 9. मूल्यों के विकास में परिवार समाज तथा शिक्षा संस्थाओ की क्या भूमिका होती है । अपने जीवन के उदाहरण देकर स्पष्ट करें ?

Ethics

- सांस्कृतिक सापेक्षवाद की शुरूआत 1920 के आस–पास मानी जाती है ।
- Ethno Centrism:–''स्वजाति व स्वसमूह केन्द्रवाद'' इसका अर्थ है कि हमारे यहाँ होता है वह सही है और सब गलत है होता है ।
- Cultural Relativism:- प्रत्येक संस्कृति विशिष्ट है हमारी संस्कृति का मूल्यांकन उसको समझकर किया जाए उसमें लचीलापन हो ।
- Xeno-Centrism:- ''परजाति केन्द्रवाद'' दूसरे समूहो को केन्द्र में रखकर अपने समूहो का आंकलन करना
- जरूरत से कम विश्वास होता है
- अपना मूल्यांकन किसी दूसरे के आधार पर करना

1955–Hindu Code Bill
उत्तराधिकारी अधिनियम

''संकल्प स्वतंत्रता'' **(Freedom of will) –**

जब निर्णय करते समय स्वाधीनता हो कि मैं निर्णय करू या नही अर्थात निर्णय करने की स्वंतत्रता हो ।

निर्णय करने से पहले हमे सामने वाले की परिस्थिति में खुद को रखकर देखना चाहिए ।

''किसी व्यक्ति को नैतिक और अनैतिक मूल्यो में निर्णय करने की क्षमता को 'संकल्प स्वंतत्रता' कहतें है ।''

सिग्मन फ्रायड ''ऐसा कोई मनुष्य नही है कि वह मन के अनुसार स्तर पर भी नैतिक हो''

बिना **Action** के हम किसी के नैतिक या अनैतिक होने का दावा नही कर सकते है ।

Action

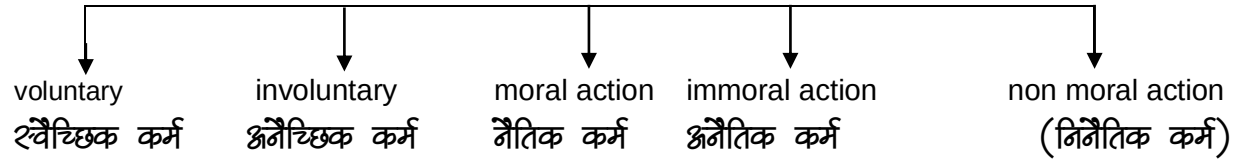

संकल्प स्वंत्रत विद्यमान है उदा. छींक आना, गिलास का अचानक टूटना

Voluntry

इसे दो भागो में बाँटा है ।

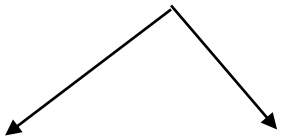

Conseous voluntary action
(सायास, संजग कर्म)

habitual voluntary action -
(आदतन कर्म)

- यह Action भी शुरूआत में Conseous Action माना जाता है

Moral Action (नैतिक कर्म)

- उचित कर्म
- ये दोनो voluntary action है
- Immoral Action (अनैतिक कर्म)
- अनुचित कर्म
- Non Moral Action (नीतितटस्थ कर्म) :–यह Invountany Action में आता है ।
- freedom of will का अभाव हो
- यह न तो नैतिक है और न ही अनैतिक ।
- उचित और अनुचित से परे ।

संकल्प की स्वतंत्रता:– नैतिकता के क्षैत्र में संकल्प की स्वतंत्रता एक आधार मूलधारणा है इसका अर्थ है जो व्यक्ति ने कर्म किया है उसका चयन करने की स्वाधीनता उसके पास थी ।

दूसरे शब्दों में:– यदि किसी व्यक्ति ने कोई कार्य सोच समझकर अपने पूरे होश–हवास में किया है तो हम कहेगें की उसके पास संकल्प की स्वंतत्रता थी । महान जर्मन दार्शनिक 'कांट' ने संकल्प की स्वंतत्रता को नैतिक व्यवस्था के तीन अनिवार्य तत्वों में से एक बताया है ।

व्यक्ति जो भी कार्य करता है वे या तो स्वैच्छिक (voluntary) था अनैच्छिक (involutory)

स्वैच्छिक कर्म वे है जिनके मूल मे संकल्प की स्वंतत्रता विद्यमान थी । जबकि अनैतिक कर्मो के संबंध में माना जाता है कि वे संकल्प स्वंतत्रता से रहित थे अनैच्छिक कर्मो में शामिल है ।

1. छोटे बच्चो के कार्य
2. विक्षिप्त व्यक्ति के कार्य

3. प्रतिक्षेप (Regleex Action)Ex. छीकना, चौंकना
4. अचेतन या सम्मोहन की स्थिति में किये गऐ कर्म
5. प्रकृतिमूलक कर्म, Ex. डरना
6. दबाव या बाह्यता में किये गये कर्म
7. आकस्मिक रूप से किये गये कर्म Ex. हाथ से गिलास छूटना

Question - मूल्य शाश्वत होते है या समय के मूल्य के साथ बदल जाते है ?

Ans.- बदल जाते है।

संकल्प की स्वतंत्रता थी या नही यह निर्धारित करना बहुत जरूरी होता है क्यों कि अगर यह थी या नही हम उस कर्म को नैतिक या अनैतिक (Immoral) नही कह सकते इसे (Non Moral) नीतितटस्थ ही कहना होगा ।

संकल्प की स्वतंत्रता थी या नही इसका फैसला निम्नलिखित कसौटियों से हो सकता है ।

1. कार्य करने की शारीरिक क्षमता की उपस्थिति ।
2. कार्य करने की मानसिक क्षमता ।
3. कार्य से सम्बधित ऐसे विकल्प होने चाहिए कि वह किसी कर्म को करने या न करने का निर्णय कर सकता है ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

नियतिवाद (**Determinism**)

- जब कुछ पहले से ही पता हो
- 'एथिक्स'– ऐसे ही लिखना है ।
- 'एथिक्स' नैतिक व्यवस्था के रूप में व्यक्त करते हुऐ लिखना है ।

- 'एथिक्स' — दर्शन में इसे (मूल्य मीमांसा) Axiology भी कहते है
- 'एथिक्स' — सामाजिक नैतिक व्यवस्था (Social Moral Order)

एथिक्स' शब्द का प्रयोग दो संदर्भो में होता है पहले संदर्भ में यह दर्शन शास्त्र की शाखा है जिसे नीतिशास्त्र या नीतिभाषा कहते । मूल्य मीमांसा (Axiology) भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द है ।

दूसरे अर्थ में नैतिकता का अर्थ नैतिक नियमो व प्रतिमानों से है जो किसी भी समाज में नैतिक व्यवस्था को बनायें रखने के लिए प्रयोग में आतें है ।

यदि एथिक्स को दर्शन शास्त्र की शाखा के रूप मे देखे तो इसकी महत्वपूर्ण विशेषताऐं निम्नलिखित है

- यह एक मानकीय विषय है ना कि वणर्नात्मक (**Normative**) इसका अर्थ है कि यह मौनिक विज्ञान की तरह सिर्फ अपने जगत की व्यवस्था नही करता या सिर्फ क्या है का उत्तर नही देता । बल्कि यह भी बताता है कि क्या होना चाहिए' । दूसरे शब्दो में यह समाज का यथार्थ बताने के साथ–साथ उसके लिए आदर्शो को भी गढता है ।

नीतिशास्त्र समाज में रहने वाले सामान्य वयस्कों के ऐच्छिक कर्मो तक अपना विश्लेषण सीमित रखता है । इसमें तीन बाते महत्वपूर्ण है –

1. नीति शास्त्र का सम्बन्ध सिर्फ सामाजिक मनुष्यों से है यदि हम कल्पना करे कि यदि कोई मनुष्य समाज से अलग रहता है तो वह नीति शास्त्र के दायरे में नही आयेगा ।
2. केवल सामान्य वयस्को के कर्मो का मूल्याकंन कि जाएगा बहुत छोटे बच्चो या असामान्य/विक्षिप्त वयस्कों को इस दायरे में नही रखा जायेगा ।
3. नीति शास्त्र सिर्फ ऐच्छिक कर्मो अर्थात आचरण (**Conduct**) का मूल्यांकन करता है । ऐसे कर्मो कर नही जो अनैच्छिक हो या संकल्प की स्वतंत्रता के अभाव में किये गए हों ।

'एथिक्स' का दूसरा अर्थ ज्यादा महत्वपूर्ण और व्यापक है इस अर्थ में नैतिकता या नैतिक व्यवस्था विष्व के प्रत्येक समाज में देखी जा सकती है इस नैतिकता या नैतिक व्यवस्था के प्रमुख लक्षण निम्नलिखित है :–

1 भूल (error) – जो पूरी तरह से बिना जानकारी के हुआ वह भूल है ।

2 पाप (Sin) – माना कि सैर करते समय कोई मेढक पैर के नीचे आकर मर जाये तो वह पाप है ।

3 अपराध (Crime) – रेड लाइट क्रास कर जाना अपराध है ।

- जो नैतिक रूप से गलत है वो 'पाप' है ।
- कानूनी रूप से गलत है वो 'अपराध' है ।
- जो नैतिक व कानूनी रूप से गलत है पाप + अपराध है ।
- यदि पाप किया है तो मन में **'Guilt Feeling'** (अपराध बोध) होगा ।
- नैतिकता अभ्यास से आती है ना कि जन्मजात होती है ।

1. नैतिक व्यवस्था या नैतिकता अपनी प्रकृति में सार्वयोगिक (universal) व सार्वभालिक है । किन्तू सिर्फ इस अर्थ में कि यह प्रत्येक मानव समाज में पायी जाती है । आदिय से आदिय जन जातिय समाज से लेकर अधिकतम विकसित समाज में इस व्यवस्था की उपस्थिति देखी जा सकती है ।

2. नैतिकता मनुष्य की जन्मजात या वंशानुगत विशेषता नही है उसे सीखना पडता है जब कठोर अभ्यास से कोई नैतिक मूल्य व्यक्ति के जीवन का सामान्य हिस्सा बन जाता है तो उसे सद्गुण (**Virtue**) कहते है । यदि व्यक्ति नैतिकता का अभ्यास ना करे और अपनी प्रवृत्तियों के वंशीभूत हो जाए तो उसमें (Vices) दुर्गणों का विकास होता है ।

3. नैतिकता एक मत्यातमक (Dynamic) अवधारणा है । अर्थात देशकाल परिस्थितियों से प्रभावित होती है । कुछ नैतिक मूल ऐसे है जो लगभग हर समाज में हमेशा माने जातें है- ईमानदारी, शांति, सहयोग आदि जबकि कुछ नैतिक मूल्य ऐसे होते है जो समाज की विशेष परिस्थितयों से निर्धारित होते है जैसे- आजादी, आदिय, या पिछडे समाजो में साहस और वीरता जैसे मूल्य केन्द्र मे होते है जबकि विकसित या सम्पन्न समाजो में शांति या सहअस्तित्व व सहिष्णुता जैसे मूल्य प्रमुख हो जाते है ।

4. हर नैतिक व्यवस्था अपनी प्रकृति में परामर्श देने वाली होती है अर्थात वह बताती है कि विभिन्न परिस्थितियों में प्रत्येक व्यक्ति को क्या करना चाहिए और क्या नही ।

5. नैतिक व्यवस्था अनिवार्यत कानूनी व्यवस्था के समानान्तर नही होती ऐसा हो सकता है कि किसी कृत्य को नैतिक व्यवस्था गलत माने किन्तू कानून गलत ना माने जैसे पशु हिंसा तथा पेड-पौधो के प्रति गलत व्यवहार दूसरी ओर ऐसा भी हो सकता है कि कानून किसी कृत्य का अपराध घोषित करे किन्तू समाज की नैतिकता उसे गलत न माने जैसे कुछ क्षेत्रों में बहुपत्नी व दहेज प्रथा एक समय तक सती प्रथा भी कानूनी दृष्टि से अपराध थी जबिक समाज के एक बडे हिस्से की उसमें नैतिक आस्था बनी हुई थी ।
6. नैतिक व्यवस्था दो प्रकार के दबावो से संचालित होती है आन्तरिक तथा बाहय आन्तरिक दबाव का अर्थ इस बात से है कि बच्चो में बचपन से ही ऐसे मूल्य और संस्कार भरे जाते है कि अनैतिक कृत्य करने या उसकी इच्छा होने से उनका मन अपराध भावना से भर उठें ।

   बाहरी दबाव का अर्थ है कि समाज के अन्य सदस्य या अलोचना या निषेधो आदि के माध्यम से व्यक्ति के अनैतिक व्यवहार को नियन्त्रित करते है (गौरतलब है कि कानून बाहरी दबावों से संचालित होता है अर्थात दण्ड के भय से जबकि नैतिक व्यवस्था में मुख्य भूमिका आन्तरिक दबाव की होती है)

Objective	Subjective
वस्तुनिष्ठ/परक	व्यक्तिनिष्ठ/परक
विषयानिष्ठ/परक	आत्यनिष्ठ/परक
• समान होने की बाहयता (सभी की राय समान हों)	• मेरी राय में
• तथ्य objective	• राय **Subjective** है ।

7. इस प्रश्न पर गम्भीर विवाद है कि नैतिक व्यवस्था वस्तुनिष्ठ है या आत्यनिष्ठ वास्तविकता यह है कि सम्पूर्ण नैतिक व्यवस्था को एक वर्ग में रखकर फैसला नही किया जा सकता है ।

कुछ बुनियादी नैतिक प्रतिमान ऐसे होते है जो समाज के अस्तित्व के लिए जरूरी है और कुछ अपवादों को छोडकर सारा समाज उन्हे स्वीकार करता है । ऐसे प्रतिमान लगभग वस्तुनिष्ठ होते है जैसे सामान्य स्थितियों में किसी मनुष्य का वध ना करना, बालात्कार ना करना किसी बच्चे को चोट ना पहुचाना ।

नैतिक मानदण्डों के विभिन्न स्तर होते है और उनकी वस्तुनिष्ठता उसी अनुपात में कम या ज्यादा हो जाती है कभी-कभी समाज के विभिन्न समुदाय अलग-अलग मानदण्डों का समर्थन करते है एक समुदाय के भीतर वस्तुनिष्ठा बनी रहती है किन्तु दोनो समुदायों की तुलना की दृष्टि से नैतिक नियम आत्मनिष्ठ हो जातें है (जैसे कुछ हिन्दुओं में संगोत्र विवाह अनैतिक माना जाता है) जबकि मुसलमानों में परिवार के भीतर से भी परिवार के भीतर विवाह नैतिक माना जाता है ।

इसी प्रकार जहाँ जैन और वैष्णव पशु हिंसा को पूर्णत अनुचित मानतें है वही मुस्लिम, ईसाई, यहूदी, सिक्ख व शाक्त समुदाय पशु हिंसा को अपने धार्मिक आचरण का हिस्सा मानते है । कई नैतिक मूल्य और नियम ऐसे भी है जिसमें वस्तुनिष्ठता का स्तर काफी कम होता है किसी अल्पसंख्यक समुदाय (जैसे भारत में पारसी समुदाय के नैतिक नियम इस वर्ग में आ सकतें है) इसी प्रकार जिन व्यक्तियों का नैतिक आचरण बहुत ऊँचा होता है, उनके स्तर पर भी अधिकांश समाज नहीं पहुँच पाता उदा. के लिए पश्चिम में ईसा मसीह है बुनों, सुकरात जबकि भारत में महात्मा गाँधी, भगत सिंह, दधिचि और शिवि जैसे व्यक्तियों ने जैसे मानदण्डों को चुना वहाँ तक समाज के बहुत कम लोग ही पहुँच सकतें है । सार यह है कि नैतिक व्यवस्था न तो केवल वस्तुनिष्ठ होती है और न केवल आत्मनिष्ठ जबकि कुछ मूल्यों में वस्तुनिष्ठ ज्यादा होती है तथा शेष मानदण्ड समुदाय को जनसंख्या क्या कठिनाई के स्तर के कारण आत्मनिष्ठ की ओर उन्नमुख होते है ।

प्रश्नः- नैतिक व्यवस्था की जरूरत क्यो पडती इसके क्या लाभ है ।

Thomas Hobbes	**Aristotle** (अरस्तु)
➢ कहा की हर व्यक्ति हर व्यक्ति का शत्रु है । ➢ नैतिकता का संबंध राज्य की शक्ति से है।	➢ व्यक्ति को व्यक्ति राज्य ही बचाता है।

1. **subjectivity** कम हो जाती है ।
2. समाज का बहुत सारा समय बच जाता है ।

Ex.-

- यदि कोई बच्चा बचपन में समाज से अलग हो जाये तो उस पर कोई नीतिशास्त्र लागू नही होगा
- मतलब ये कोई समाज शास्त्र या नैतिकता से सम्बध नही रखतें है ।
- मजबूरी में किया गया कर्म 'निरनैतिक' कहलाता है
- ना तो नैतिक ना तो अनैतिक

नैतिक व्यवस्था की जरूरत

1. **Subjectivity** कम हो जाती है
2. समय की बचत होती है । जैसे – यदि नैतिक व्यवस्था बनी हुई है तो Fixed हो जाता है कि हमें क्या करना है यह सोचने में व्यर्थ नही होता है कि क्या करें ।
3. समाज की अराजकता को कम करना ।
4. **Objectivity** बढ जाती है ।
5. **Force** (बल) – नैतिकता के पीछे धर्म का बल कार्य करे तो जीवन भी छोडने के लिये तैयार रहता है ।

''सिग्मन फ्राईड''

- ID (ईड)
- वासनाएँ
- मूल प्रवृत्तियाँ
- **ID** जन्मजात (**Genetic**) होता है

Super Ego (परम अहम)

- नैतिक मन
- जो चीजे नैतिक बताकर सिखाया जाये तो वह **Super Ego** है ।
- अर्न्तआत्मा कुछ नही है **Super Ego** होती है ।
- समाजीकरण से संस्कार को बढाना ।
- पशुओं मे **Super Ego** नहीं होती है । इनके उपर नैतिक दबाव नही होता है

नैतिकता की विकास की आवश्यकताएँ या विकास की स्थितियाँ

- **Social Need**
  - हर समाज में **Social Need** अलग–अलग होती है ।
  - **Social Need** से **Value** (मूल्य) पैदा होते है ।
  - कुछ **Value universal** होती है तथा कुछ समाज से पैदा होती है ।
  - **Value** अमूर्त होती है जिसे महसूस किया जा सके या सोचा जा सकें ।
  - इन्द्रियो के द्वारा महसूस नही किया जा सकता है केवल सोचा जा सकता है ।

समाज में झगडा	**Need**	शांति
भौगोलिक कारणो की वजह से सुस्ती	**Need**	स्फूर्ति
समाज में खर्चीले लोग	**Need**	संयम
पानी की कमी	**Need**	मितव्ययता

Social Value को क्रियान्वयन करने के लिए सामाजिक प्रतिमान (Niorms) की आवश्यकता होती है । जो कि एक भूर्त अवधारणा है

जैसे – माता–पिता के सम्मान में पैर छूना (Norm) है ।

- धर्म निरपेक्ष नैतिकता में विचलन ज्यादा होता है ।
- धर्म रहित नैतिकता में विचलन नही होता है
- Norms का उल्लघंन करने पर कोई विशेष दबाव (तनाव) नही होता है ।

क्या नैतिक व्यवस्था भीतर से अनैतिक होती है ।

- जब भी कोई भी प्रतिमान/नियम/कानून बनातें है तो वो कुछ के लिए लाभदायक या कुछ के लिए हानिकारक है परन्तु अधिकतम लोगो के लाभ वाले प्रतिमान सही माना जाता है ।
- मार्क्सवाद व नारीवाद व अम्बेडकरवाद
- Post Modirnisum (उत्तर–आधुनिकवाद)
- आदिवासी विमर्श

मार्क्सवाद, (मार्क्स, ग्राम्सी, अल्थूजर) के अनुसार समाज 2 वर्ग (विभाजन)

अमीर वर्ग

- नैतिक मूल्य अमीरो द्वारा बनाये जाते है
- हिंसा नही, चोरी नही
- Education System
- Rellgion System
- Ethical System
- विद्रोह की भावना मन में रहे तकि गरीबो के मन मे अमीरो के खिलाफ विद्रोह न रहे ।

गरीब वर्ग

- गरीबो को विद्रोह नही करने देना है ।
- धर्म और रीतिरिवाज एक ऐसा रूप गढते है कि गरीब लोग अपना हक ना मांग पाये ।

नैतिक व्यवस्था/नैतिक नियम कैसे बनते है :-

किसी भी नैतिक नियम के बनने की प्रक्रिया दीर्घकालिक होती है । सबसे पहले समाज समुदाय या संस्थान एक ऐसी आवश्यकता महसूस करता है कि इसे अपना अस्तित्व बनाऐं रखने या सुचारू रूप से चलाने के लिए किसी नैतिक मूल्य की व्यक्तियों के भीतर आवश्यकता है उदा. के लिए अगर किसी समाज में लोगो में बात-बात पर झगडे होते है तो वहाँ शान्ति नैतिक मूल्य के रूप में उभरेगी अगर समाज में उत्पादन की कमी है तो किफायत या मितव्यता, अगर प्रदूषण ज्यादा है तो पेड पौधो के प्रति प्रेम जैसे मूल्य वहाँ स्वभाविक रूप से पनपेगें ।

समस्या यह है कि नैतिक मूल्य अमूर्त होते है । अर्थात इन्हे सोचा समझा तो जा सकता है किन्तु इन्द्रियों से अनुभव तो नही किया जा सकता है कुछ बुद्धिमान लोग सिर्फ मूल्यों के स्तर पर रहकर सामाजिक संस्था का रूप धारण कर लेते है विवाह एक संस्था है संस्था के स्तर पर आकर वह नैतिक नियम पूर्णतः व्यवस्थित हो चुका होता है ।

लाभ व हानियाँः-

नैतिक नियमों का लाभ यह है कि लोग बिना सोच विचार किये अपनी आदतों के रूप नैतिक व्यवहार करने लगते है और समाज में व्यवस्था बनी रहती है ।

इसका नुकसान यह है कि कभी-कभी नैतिक नियम तर्क विरोधी होकर भी बने रहतें है और समाज का नुकसान करतें है उदा. के लिए पेडो को पानी देने का नियम गर्मियों के लिए अच्छा है किन्तु उसका प्रयोग मानसून में भी होता है जो नुकसान पहुँचा सकता है पडोसियों के साथ भोजन करने का अनिवार्य नियम किसी गरीब व्यक्ति के लिए घातक हो सकता है अगर उसके पास पर्याप्त संसाधन नही है ।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जिस कारण से कोंई नैतिक मूल्य तथा नैतिक नियम बना था वह समाप्त हो गया हो और विपरीत परिस्थितियों में भी नैतिक नियम रूढियों की तरह चलतें रहे ।

पशु बलि के सन्दर्भ में कई विचारक ऐसा तर्क देते है । जन सामान्य को नैतिकता अधिक मूर्त तथा ठोस रूप में चाहिए होती है इस आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए मूल्यों से प्रतिमान (Norms) बनाए जातें है और समाज से अपेक्षा कि जाती है कि उनका पालन करे उदा. के लिए अगर मूल्य पेड पौधो को संरक्षण है तो ऐसा प्रतिमान बनाया जा सकता है कि किसी वृक्ष को पानी देकर ही भोजन किया जाना चाहिए इसी प्रकार अगर शांति का मूल्य अपेक्षित है तो नैतिक प्रतिमान यह हो सकता है कि अपने पडोसियो से गले मिलना आवश्यक है या सप्ताह में एक बार उनके साथ भोजन करना जरूरी है

प्रतिमान नैतिक व्यवस्था को वस्तुनिष्ठता प्रदान करते है । किन्तु इनकी मजबूती के लिए जरूरी है कि इनके पास मे सामाजिक दबाव बनाया जाए तो लोग प्रतिमानो का नियमित पालन करते है । समाज उन्हे विशेष सम्मान देता है । जबकि प्रतिमानो को भंग करने वालों को तिरस्कार झेलना पडता है । इससे नैतिक प्रतिमान मजबूत होते है धीरे - धीरे वे प्रथा, परम्परा तथा लोक नीतियों का रूप धारण कर लेते है और हर अगले चरण के साथ अधिक मजबूत होते है ।

अनैतिकता

मार्क्सवाद- वर्ग के स्तर पर	उत्तरआधुनिकता की विचारधारा	नारीवाद	अम्बेडकरवादी 1. गीता 2. जाति

Women are not born, it is Made- सिमॉन्ड

<u>अम्बेडकरवादी के अनुसार</u>
- जातिवाद अनैतिक है ।
- धर्म से आपत्ति है

<u>गीता के अनुसार</u>:- धर्म का मतलब <u>वर्ण धर्म</u> से है

वर्णधर्म-साधुओं की रक्षा, दुष्टों का अन्त

<u>उत्तरआधुनिकता की विचारधार</u>
- छोटे-छोटे समूह बनाकर सबकी विचार धारा सबकी अपनी और अपने अनुसार नैतिक ढाँचा तैयार करे
- सबकी अपनी विचारधारा और अपना दृष्टिकोण होता है यही उत्तरआधुनिकता बढती है ।
- सबकी अपनी नैतिकता होनी चाहिए उसे किसी के ऊपर थोपना नही है ।

नैतिक व्यवस्था भीतर से अनैतिक क्यो होती है -

हर नैतिक व्यवस्था के भीतर कुछ ऐसे तत्व होते है जो उसे अनैतिक सिद्ध करते है ।
इस बात की व्याख्या दो प्रकार से की जा सकती है । पहले स्तर पर हर नैतिक व्यवस्था में कुछ न कुछ रूढियाँ पनपती है जो समाज की वर्तमान आवश्यकताओं के पक्ष में नही बल्कि उनके विरूद्ध काम करती है उदा. के लिए वर्तमान संकट पर्यावरण प्रदुषण का है और दीपावली जैसे त्योहार जिन्हे मानना हिन्दुओं के नैतिक कर्तव्य की तरह है नुकसान करता है ।
दूसरा पक्ष यह है कि नैतिक व्यवस्था चाहे जितनी भी सावधानी से बनायी जायें वह समाज के कुछ समूहों को लाभ पहुँचाती है जबकि कुछ समूह तुलनात्मक रूप से नुकसान में रहते है यह दृष्टि कोण कई विचार धाराओं की ओर से प्रस्तुत किया गया है जिनमें से कुछ का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार हैः-

(क) <u>मार्क्सवादः-</u> मार्क्सवाद के अनुसार वर्ग विभेद को बनाये रखने के प्रयास मात्र है । हर समाज दो वर्गो अमीर व गरीब वर्ग में बँटा हुआ है । अमीर वर्ग चाहता है उसकी सम्पत्ति तथा संसाधन सुरक्षित रहे और गरीब लोग उसके विरूद्ध क्रांति न करे । डरा-धमका कर शोषण की व्यवस्था लगातार नही
चलाई जा सकती व्यवस्था की निरन्तरता के लिए जरूरी है कि वंचित व्यक्तियों को वचन की अनुभूति से और विद्रोह चेंतना से दूर रखा जाए यह काम उनके वैचारिक

अनुकूलन (ideological coalition) के द्वारा किया जाता है धर्म और शिक्षा, नैतिक व्यवस्था इसी के साधन है उच्च वर्ग गरीबो के मन में ऐसे नैतिक मूल्य बैठा देता है जो वस्तुत अपने पक्ष में होते है उदाहरण के लिए चोरी ना करना, हिंसा न करना धैर्य रखना, क्षमा कर देना, ईश्वर में आस्था रखना, अपने कर्मो के बदले फल की कामना न करना ये सभी मूल्य वस्तुत अमीर पूँजी पतियों को ही लाभ पहुँचाते ।

(ख) <u>नारीवाद:-</u> नारीवादियों का दावा है कि दुनिया के हर समाज में पुरूषों को अवैध लाभ पहुँचाती है और नारियों का वचन करती है उदा. नारियों से अपेक्षा की जाती है कि उनमें त्याग, ममता, धैर्य, विनम्रता सत्यनिष्ठा, जैसे मूल्य भरपूर मात्रा मे होने चाहिए क्योकि ऐसे मूल्यों का लाभ पुरूषों को ही मिलता है परिवार में शक्ति का वितरण हो या पैत्रिक सम्पत्ति का वितरण हो पुरूषों को हर जगह प्राथमिकता मिलती है यह व्यवस्था पुरूषो को अधिकाधिक अधिकार व महिलाओं को अधिकाधिक कतर्व्य सोचती है इसलिए यह नैतिक नही अनैतिक है ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

धार्मिक और अनैतिक

Religion of Morality

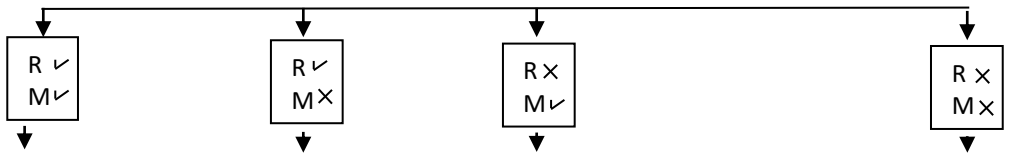

दान	पशु बलि बच्चों की बलि देवदासी प्रथा	अंग दान रक्त दान पीने के लिए देना चैराठी देना	हत्या करना बलात्कार और कोई भी अपराध

- न तो धर्म के लिए नैतिकता आवश्यक है और न ही नैतिकता के लिए धर्म की आवश्यकता है ।

दो वर्गो पर विचार करतें है –

1. धर्म नैतिकता के लिए आवश्यक है ।
2. धर्म नैतिकता के लिए अनावश्यक/विरोधी है ।

Religion & Morality

धर्म आवश्यक

- ❖ महात्मा गांधी
  - नैतिकता ईश्वर का आदेश है ।
  - धर्म से नैतिकता में मजबूती आती है ।
  - धर्म व्यक्तियों की जिज्ञासा संतुष्ट करके उसके व्यक्ति को सन्तुष्टि मिलती है ।
  - कर्म सिंद्धान्त

धर्म अनावश्यक/विरोधी

- ❖ मार्क्स
- ❖ भगतसिंह
  - प्रत्येक मनुष्य परिपक्व है उसे खुद से तय कर लेना चाहिए कि हमें अनैतिक काम करनें है ।
  - धर्म के कारण नैतिकता में रूढिया पैदा होती है जैसे कुछ ऐसी भी रूढिया है जो मानव विरोधी है ।
  - कर्म के कारण नैतिकता की वस्तुनिष्ठा कम हो जाती है।
  - धर्म अपने आप में अमीरों द्वारा बनाई गई व्यवस्था है ।
  - धर्म नैतिकता में भेद भाव लाता है ।
  - जो धर्म निरपेक्ष (सभी धर्मो को मानने वाला) होता है उसके धर्म नैतिकता में लचीलापन होता है ।

किसी समाज के नैतिक नियमों के निर्धारक तत्व

भौगोलिक कारण

भौगोलिक स्थिति ज्यादातर यह तय करतें है कि क्या करना नैतिक है और क्या अनैतिक है

1. कृषि

Toppersnotes
Unleash the topper in you

शाकाहार – जहाँ **Food Production** सही वहाँ लोग शाकाहारी होते है ।
माँसाहार – जहाँ **Food production** कम है वहाँ माँसाहारी होना नैतिक है ।

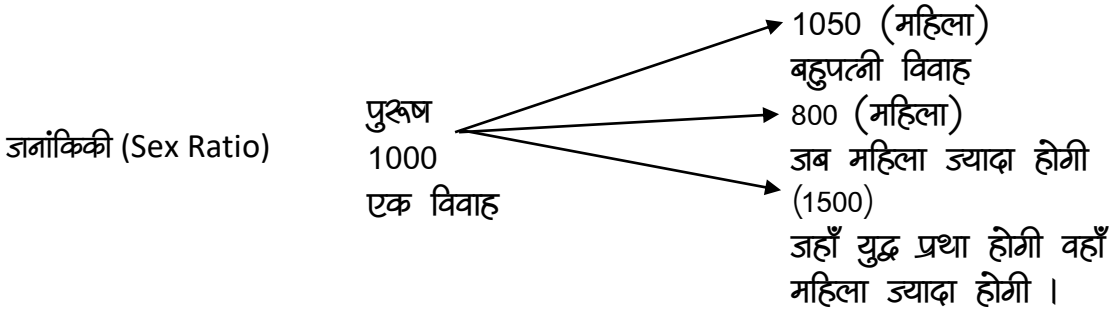

2. शराब पीना नैतिक है जहाँ के प्रदेशों में सर्दी होती है ।

जनांकिकी (Sex Ratio)

पुरूष
1000
एक विवाह

→ 1050 (महिला)
बहुपत्नी विवाह

→ 800 (महिला)
जब महिला ज्यादा होगी

→ (1500)
जहाँ युद्ध प्रथा होगी वहाँ महिला ज्यादा होगी ।

निर्धारक तत्व

1. भौगौलिक कारण– किसी समाज की नैतिकता या समाज को नियमो को तय करने का कारण भौगोलिक कारण होता है

2. जनांकिकी–Sex Ratio ज्यादा होता है पुरूषों का महिलाओं के मुकाबले
   पुरूष 1000
   महिलाऐं 985

महिलाओं में जीवन प्रत्याशा ज्यादा होती है पुरूषों के मुकाबले

3. आर्थिक कारण
   - अर्थव्यवस्था किस Modal पर चलती है ।
   - Model

Capitalist (पूँजीवाद)
- इसका सबसे बडा मूल्य साहस से तात्पर्य है ।
- उद्यम करने के साहस से तात्पर्य है ।
- यहाँ समानता ज्यादा स्वतंत्रता पर बल होता है

Socialist
समानता
न्याय
मानवाधिकार

- Activities– प्राथमिक या द्वितीयक क्रियाऐं किस पर आधारित है ।

अमेरिका समाज में मूल्य बहुत तेजी से घसे हुए हैं ।

प्राथमिक क्षैत्रः– कृषि 1. पर्यावरण मित्रता 2. भाईचारा केन्द्र मे होगा ।
तृतीय क्षैत्र – सेवा
1. गतिशीलता होनी चाहिए
2. विश्व नगर–विश्व के अधिकांश लोग जिस (देश) शहर में रहतें है ।
3. **Flexibility** होती है ।

4. राजनीतिक –

लोकतन्त्र	राजतन्त्र/अल्पतन्त्र
• समानता का मूल्य होगा • आजादी का अभाव होगा	• आज्ञापालन (राजतन्त्र की पहचान है)

5. ज्ञान का विकास स्तर –

0-5	नियम नही मानना
5-9	नियम Absolute होता है
9 +	नियम केवल साधन है ।

Ethics

Branches of Ethics in Technical Form

De-Ontology
- इसमें नियम महत्वपूर्ण है प्रयोजन को इसके परिणाम से कोई मतलब नही है ।
- परिणाम निरपेक्ष
- पैट्रिक नॉवेल स्मिथ द्वारा दिया गया ।

Ex:– जिस बात का जवाब न देकर ईश्वर या अल्लाह के ऊपर छोड कर जवाब देना
"ईद पर बकरा काटना"
उदा. हमे नैतिक नियम नही नैतिक प्रायोजन होना चाहिए

Teleology
- प्रयोजन को महत्व देना
- परिणाम सापेक्षवाद
- इसमे अपने विवेक का प्रयोग करना है

Virtue Ethics
- सद्गुणो को महत्व देना

किसी व्यक्ति के नैतिक या अनैतिक होने के निर्धारक तत्व होने के स्तर:–

1. आन्तरिक पक्ष (**Internal Face**)

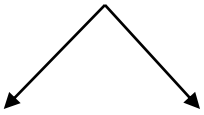

जैविक (**Bio-logical**)
- हार्मोन

मानसिक (**Mental**)
- समाजीकरण

2. बाहरी पक्ष (**External Face**)
- Social Control कितना है
- समाज का स्तर
- कानून के नियम पर चलना
- कानून का पालन कितनी कठोरता से होता है

Toppersnotes
Unleash the topper in you

- विकलांगता
- ब्लड प्रेशर
- उम्र

Social → समाजिक व्यवहार करने वाला ।
Unsocial → समाजिक व्यवहार से बचने वाला ।
Anti Social → समाज के विरोध से काम करने वाला
A Social → समाज तटस्थ (बच्चे को ना तो **Social, Unsocial, Anti Social**,कुछ भी नही कहा जा सकता ।

बच्चे को मूल्य भाषा प्रतिमान सिखाना ही समाजीकरण **(Super Ego)** कहलाता है ।

" सीसेर लांब्रोसो के अनुसार"

- इन्होने बताया कि कौन व्यक्ति अपराधी बनेगा कौन नही यह जैविक प्रक्रिया पर आधारित होता है।
- यह व्यक्ति के समाजीकरण पर निर्भर करता है कि वह क्या करेगा यदि उसके नैतिक मूल्य मजबूत होगे तो यह तय रहेगा कि वह अच्छा होगा ।

Super Ego
→ कौनसा कार्य नैतिक है या अनैतिक
→ नैतिकता की तीव्रता व मजबूती समाजीकरण से तय होता है (घर या स्कूल से तय होगा)

कोई कार्य नैतिक है या नही कैसे तय होगा

1. कर्ता (**Actor**)
2. इरादा/प्रयोजन (**intent intention**)
3. प्रभाव/परिणाम (**consequences**)
4. परिस्थितियाँ
   - तात्कालिक
   - पृष्ठभूमि